इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम।। १३९ ।।

इलम का सुख और इश्क का सुख दोनों की लज्जत अलग-अलग हैं। श्री राजजी महाराज की यह अपनी मर्जी है जिसको जैसा चाहें सुख दें।

ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए।। १४० ।।

इलम और इश्क दोनों ही श्री राजजी महाराज को चाहते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज जिनको जो मेहर कर दें (इश्क या इलम), उसे रूह अपने सिर पर स्वीकार करती है।

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस।। १४१ ।।

श्री महामतिजी रूहों को कहते हैं कि तुम यदि परमधाम की अरवाहें हो तो श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले पर प्याले लेकर गर्क हो जाओ।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३४९ ।।

श्री ठकुरानी जी को सिनगार पेहेलो

मंगला चरन

बरनन करुं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।। १ ।।

श्री महामतिजी बड़ी रूह श्यामा महारानीजी की साहेबी का वर्णन करती हैं। बारह हजार रूहें इनके नूर के अंग हैं। परमधाम में यह सब एक दिल है। यह सब शोभा इनकी ही है।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।। २ ।।

सर्वप्रथम श्री श्यामा महारानी के चरणों में प्रणाम करती हूं और श्री राजजी से विनती करती हूं कि हे धनी! मुझे श्री श्यामा महारानीजी के चरणों से जुदा नहीं करना। इन चरण कमलों की लाल एड़ियां और लांक ही मेरे जीव के जीवन हैं (मेरे जीने का सहारा यही हैं)।

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों के नख की महिमा को कहूं या उंगलियों की, या ऊपर के टखने के रंग की, या कोमलता की महिमा को किस जबान से कहूं? मेरे तो जीव के यही जीवन हैं।

रंग नरमाई सलूकी, अर्स अंग चरन।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन।। ४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमल जो परमधाम के हैं उनकी नरमाई और सलूकी देख-देखकर बलि बलि जाती हूं। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

Nijanand App

इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन।।५।।

श्री श्यामा महारानी के चरणों में ही मैं पड़ी रहूं। हे मेरे धनी! मेरी रूह की नजर खोल दो जिससे अपने नैनों से बिना पलक झपकाए इन्हें देखती रहूं। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

चारों जोड़े चरन के, और अनवट बिछिया रोसन।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन।।६।।

श्री श्यामा महारानी के चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घूंघरी, कांबी और कड़ला तथा चरणों के पंजे में अनवट और बिछुआ का तेज और सुन्दर सुरीली आवाज यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन।।७।।

हे मेरे प्राणों से भी प्यारे श्यामा महारानी! अब मुझे एक पल के लिए भी छोड़ना नहीं। अब मुझे प्यारे मेहबूब श्री राजजी महाराज की मेहर से आपके चरण कमल की पहचान हो गई है। यही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन।
पकड़ राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन।।८।।

आपके चरण कमलों को अपनी आंखों की पुतलियों के तारों में बसा लूं और पलक ढांपकर उनको पकड़ लूं, क्योंकि यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तस्करन।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन।।९।।

यह चरण कमल मेरी आत्मा को बहुत ही (मीठे) प्यारे लगते हैं और मेरी रूह की नजर से हृदय में चुभ गए हैं। मेरी रूह की नजर को यह मीठे (प्यारे) लगते हैं। अब यही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन।
ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन।।१०।।

यह चरण कमल परमधाम के हैं। इनमें से वतन की खुशबू आती है (पहचान होती है)। यह चरण कमल अखण्ड परमधाम के श्यामा महारानीजी के हैं। यह मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन।।११।।

इन चरण कमलों को अपने नैनों में बसा लूं। एक क्षण के लिए भी न छोड़ूं। इन चरणों की कृपा से मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं और मेरा घर परमधाम है, की पहचान हुई है। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन।।१२।।

श्री राजजी महाराज की मेहर ने इन चरण कमलों को मेरी रूह के अन्दर बिठाया जिससे अक्षर के पार परमधाम के दरवाजे खुल गए (पहचान हुई), मैं अखण्ड घर में पहुंच सकी। अब यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

Nijanand App

सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन।
सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन।। १३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमल ही मेरा सिनगार हैं, मेरी शोभा हैं, मेरे अंग को सुख देने वाले हैं, मेरे गले के हार हैं और खूबियां इन चरण कमलों से हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन।। १४ ।।

यह श्री राजजी महाराज की बेशुमार मेहर ही है कि मेरी निसबत में परमधाम के यह चरण कमल थे। जिनकी कृपा से मुझे अखण्ड परमधाम के श्री राजश्यामाजी मिल गए। अब यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।। १५ ।।

इन चरणों ने मेरे चित्त को खींच लिया और सब तरह से मुझे धन्य धन्य किया है। ऐसे चरण कमलों की सिफत इन जुबान से कैसे कहूं? यह मेरे जीव के जीवन है।

ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन।। १६ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आप जैसा चाहो वैसा करो। इन चरणों के सुखों को किसी और दूसरे को नहीं दिया जा सकता। दूसरे को देने की बात ही तब करूं जब कोई दूसरा हो। यह चरण ही मेरे जीव का जीवन हैं।

क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन।। १७ ।।

हे श्री राजजी महाराज! श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की महिमा कैसे कहूं? यहां बोलने का और कोई ठिकाना नहीं है। यह चरण कमल ही आपके और श्यामा महारानी के स्वरूप को मिला देते हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन।। १८ ।।

जिन पर यह चरण कमल पूरी मेहर करते हैं उन्हें पूर्ण स्वरूप के साक्षात् दर्शन होते हैं। तब पूरा इश्क आ जाता है, इसलिए मेरे जीव के यह ही जीवन हैं।

ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन।। १९ ।।

यह चरण कमल मूल निसबत से ही दिल में आते हैं। यह रूहों की परमधाम की न्यामत है जिसे धनी की मेहर ने दिया है, इसलिए इसे अब छोड़ नहीं सकते। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन।
आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन।। २० ।।

श्री राजजी महाराज यदि सब तरह की पहचान दें तो मैं अपने नैनों से रात-दिन, आठों पहर, चौसठ घड़ी इन चरण कमलों को ही देखती रहूं, क्योंकि मेरे जीव के यह ही जीवन हैं।

Nijanand App

महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन।
आए बैठे मेरे सब अंगों, मेरे जीव के एही जीवन।। २१ ।।

श्री महामतिजी मन, वचन, और कर्म से इन चरण कमलों को चाहती हैं क्योंकि अब यह चरण कमल मेरे हृदय में विराजमान हो गए हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

।। मंगला चरन सम्पूर्ण ।।

ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन।। २२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का स्वरूप यहां के पांच तत्व का नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के मन के स्वरूप हैं। इनका खाना, पीना, सुख सिनगार, सभी इच्छा करते ही पूरी हो जाती हैं।

जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान।
कहूं दुनियां में किन बिध, किन कबहूं न सुनिया कान।। २३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का परमधाम में सिनगार बड़ा अद्भुत है। दुनियां में बैठकर उसका कैसे वर्णन करूं? जिसे आज दिन तक किसी ने भी कानों से सुना तक नहीं था।

कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन।
ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन।। २४ ।।

श्यामाजी गले में, कान में, मुखारबिन्द पर, नासिका में जो-जो आभूषण धारण करती हैं, ऐसा न समझना कि जैसे दुनियां पहनती है वैसे ही श्यामाजी पहनती हैं।

या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे।। २५ ।।

वस्त्र हों या आभूषण, पूरे अंग के हों या हाथ-पैर के, जैसे मन में इच्छा होती है वैसे ही तन में दिखाई देते हैं।

अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक असल।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल।। २६ ।।

अंग के आभूषण दिल की इच्छानुसार बदलते हैं। इसी तरह से परमधाम में उनके स्वरूप का सिनगार इच्छानुसार बदल जाता है। परमधाम में नकल नहीं, अंगों की शोभा है।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने।। २७ ।।

जैसे अंग वैसे ही उन पर वस्त्र, आभूषण बने ही रहते हैं। जिस क्षण में दिल में जैसी चाहना होती है, वैसा वह पहले से ही पहना हुआ दिखाई देता है।

जाको नामै कायम, अखंड बका अपार।
सोई भूल जानी अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।। २८ ।।

परमधाम जो अखण्ड है और जहां हर वस्तु बेशुमार हैं, वहां की शोभा शुमार में लाकर वर्णन करना ही अपनी भूल है।

Nijanand App

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान।
नहीं जुदागी इन में, जुगल किसोर परवान।। २९ ।।

पहले श्री राजजी महाराज की शोभा का वर्णन किया। ऐसी ही शोभा श्री श्यामाजी महारानी की समझो। इन दोनों स्वरूपों में जरा भी अलगाव नहीं है।

हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर।। ३० ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से हैं। इनको कोई अलग अंग नहीं समझना। श्री श्यामाजी महारानी के ही नूर के स्वरूप सब रूहें वाहेदत में हैं। इनके अतिरिक्त परमधाम में और कोई नहीं है।

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर।
अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर।। ३१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की शोभा अति सुन्दर है। आत्मदृष्टि से देखिए तो श्रीराज श्रीश्यामाजी दोनों एक ही युगल-स्वरूप हैं।

लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस।
क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस।। ३२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की साड़ी का रंग लाल है। जिसमें कई तरह के कटाव हैं। कई तरह के छापे, बेलियां और नक्शकारी हैं। साड़ी के पल्लू की किनारी बहुत ही सुन्दर दिखाई देती है।

माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगूंहीं बने असल।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल।। ३३ ।।

इसके अन्दर जरी तथा कई रंग के जवेर जहां जैसे चाहिए उसी अनुसार पहले से बने दिखाई देते हैं।

बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित।
कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत।। ३४ ।।

पल्ले के किनारे पर बनी बेलें, कटाव, फूल, नक्शकारी तथा अलग-अलग युक्ति के जड़ाव बहुत सुन्दर शोभा देते हैं।

ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर।
ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर।। ३५ ।।

इन वस्त्रों को किसी ने बुना नहीं है। इसी तरह से आभूषणों को किसी ने घड़ा या बनाया नहीं है। यह शुरू से ही उनके अंग की ही शोभा है।

चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक।
जड़तर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं विवेक।। ३६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चोली (ब्लाउज) का रंग काला है। जिसमें सोने के साथ अनेक जवेर जड़े हैं। उनके गले में, हृदय पर, और बांहों पर चोली में सुन्दर जड़ाव दिखाई देता है। उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल।
कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल।। ३७ ।।

ब्लाउज में जहां पर बेलें होनी चाहिए वहां पर बेलें बनी हैं और इसी तरह से कांगरी, फूल, नक्शकारी, खजूरे, बूटियां सब शोभायमान हैं।

नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर।
नकस कटाव बेली तो कहूं, जो किन बनाए होंए हाथों कर।। ३८ ।।

सोने और नगों का वर्णन तो तब करूं जब किसी ने यह जड़े हों या बनाए हों। इसी तरह से ब्लाउज में नक्शकारी और बेलियों का वर्णन तब करूं जब वह किसी ने हाथ से बनाए हों।

चरनी नीली अतलस, माहें अनेक बिध के रंग।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग।। ३९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का पेटीकोट (लहंगा, चरनियां) रेशमी है और नीले रंग का है, जिसमें अनेक तरह के रंग शोभा देते हैं। इसकी चुन्नटों पर बेलें बनी हैं और बीच में जरी, बेल, फूल और नगों की शोभा है।

क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग।
हीरे लसनिए पांने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग।। ४० ।।

पेटीकोट के किनारे पर कांगरी बनी है, जिसमें सात नग माणिक, मोती, हीरा, लसनियां, पन्ना, पुखराज और पाच सोने में जड़े जगमगाते हैं।

वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस।
वस्तर भर्‍यो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस।। ४१ ।।

पेटीकोट के कपड़े में धागा दिखाई नहीं देता। सब तरफ एक सी जरी और कशीदे से भरा है। इस कपड़े को किसी ने न बुना है और न किसी ने कशीदा किया है। यह सब इनके अंग की ही शोभा है।

नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल।
ए केहेती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल।। ४२ ।।

पेटीकोट के नाड़े में नौ तरह के रंगों की बनावट है जो सोने की तरह उज्जवल है। यह अपने पवित्र दिल से समझना। यह परमधाम की शोभा है।

क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार।। ४३ ।।

वस्त्र हों या आभूषण, सभी सुखदाई हैं। इन सबमें खुशबू है, चमक और कोमलता है। ऐसा परमधाम का सिनगार है।

सिर पर सोहे राखड़ी, जोत साड़ी में करे अपार।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार।। ४४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के मस्तक पर राखड़ी (मस्तक का आभूषण) शोभा देती है। इसके बीच माणिक नग हैं जिसे घेरकर मोती आए हैं। दोनों किनारों के ऊपर पन्ना और पुखराज के नग शोभा देते हैं।

Nijanand App

ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल।
आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल।।४५ ।।

राखड़ी के बीच जो माणिक हैं। उसकी उपमा कैसे दूं? जिसके तेज से आसमान और जमीन सब लाल दिखाई देते हैं।

कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार।
बेन गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार।।४६ ।।

यह राखड़ी का लाल माणिक सोने में जड़ा है और आकाश तक जगमगा रहा है। इसके नीचे चोटी गूंथी है जिसमें तीन फुम्मक लटकते हैं। उनमें घूंघरी जड़ी है जो आवाज करती है।

तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर।
बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर।।४७ ।।

चोटी में तीन रंग की जरी और फुन्दनों में नगों का जड़ाव शोभा देता है। नग बारीक नीले रंग के नक्शकारी में जड़े हैं, जिसका वर्णन असम्भव है।

पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव।
हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव।।४८ ।।

मांग के ऊपर पान के पत्ते जैसी शोभा आई है। जिसमें कई तरह की बेल, कांगरी, कटाव, हीरे, खजूरे, बूटियां शोभा देती हैं, लगता है यह बड़ी जुगत से जड़ाव में जड़े हैं।

सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग।।४९ ।।

सिर पर पटली (बाल बांधने की पट्टी) की लरें मोतियों से बनी शोभा देती हैं। इनमें पांच तरह के रंग झलकते हैं। यह नीले, पीले, लाल, सफेद और मोती के हैं। मोतियों की लरें मांग के ऊपर से शोभा देती हैं।

तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी।
निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी।।५० ।।

इन्हीं नगों के फूल बने हैं जो सिर के ऊपर पटली की कांगरी में शोभा देते हैं। माथे (मस्तक) से लेकर राखड़ी तक बीच में मांग भरी है।

अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें।
ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें।।५१ ।।

यह बड़ी अद्भुत शोभा है जो देखने योग्य है। कहनी में नहीं आती। कहें तो तब, जब ऐसी शोभा कहीं और दिखती हो?

बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत।
देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत।।५२ ।।

श्री श्यामाजी के बालों की चोटी एक अलग ही तरीके से गूंथी है यह उनकी गोरी पीठ पर बलखाती लटकती है। उसके फुंदड़े में घुंघरियों की आवाज आती है तथा साड़ी के अन्दर सुन्दर शोभा दिखाई देती है।

Nijanand App

चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर।
झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर।।५३ ।।

चोली के चारों बंध पीठ पर शोभा देते हैं जिनकी कांगरी और फुम्मक साड़ी के अन्दर से झलकते दिखाई देते हैं।

ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक।
ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक।।५४ ।।

इनकी शोभा का कैसे बयान करूं? पीठ गोरे रंग की है और बीच में सुन्दर गहराई है। इसका वर्णन करते हुए यह कठोर जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत।
ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत।।५५ ।।

मुखारबिन्द की शोभा तथा माथे की शोभा कैसे बयान करूं? यह शोभा परमधाम के मूल स्वरूप की है और जबान यहां संसार की है।

पाच हीरे मोती मानिक, बेना चौक टीका सोभित।
सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अतंत।।५६ ।।

पाच, हीरा, मोती, माणिक के नगों से जड़ा हुआ सुन्दर बेंदा माथे पर टीका के समान शोभा देता है। इसकी मोतियों की लर लाल मांग के नीचे सुन्दर जगमगाती है।

जड़ित पानड़ी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत।।५७ ।।

कानों में सुन्दर टाप्स हैं। इसके नीचे दो लरें लाल और मोती की लटकती हैं। उसके जड़ाव की जोत में पांच तरह के नग झलकते हैं।

काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन।।५८ ।।

आंखों में काजल की रेखा का बयान तो तब करें, जब यह नैना सपने के तन के हों, श्री श्यामाजी महारानी के नैनों में सफेद, काला और लाल रंग सदा सुख देने वाले दिखाई देते हैं।

ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह।
ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह।।५९ ।।

श्री श्यामाजी का तन, नेत्र परमधाम के हैं। कोई और नहीं है। आत्मदृष्टि से देखने पर इनके अन्दर प्रेम ही प्रेम भरा दिखाई देता है।

नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए।
आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए।।६० ।।

श्री श्यामाजी के नैन नुकीले और तिरछे हैं। जिनकी छवि वर्णन करने में नहीं आती। वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज को तिरछी चितवन से देखती हैं।

Nijanand App

सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान।। ६१ ।।

उनके सब अंगों में अपने धनी से बात करने के लिए उमंग भरी है। माशूक श्री राजजी महाराज के इश्क से भरे गंजानगंज दिल को देखकर प्रेम भरे वचनों से उन्हें अपनी ओर खींचती हैं।

कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए।। ६२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के नैनों के तारों की शोभा कैसे कहूं? उनकी आंखों की सफेदी पर लालिमा शोभा देती है और कोनों के ऊपर काजल की रेखाएं अंग में असल बनावट की जैसी दिखाई देती हैं।

तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस।
पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस।। ६३ ।।

इनके नैनों की जो पुतलियां हैं उनमें इश्क की मस्ती भरी है। वह अपनी प्यार भरी नजर से प्रीतम को निहारती हैं और आमने-सामने श्री राजजी महाराज से नजर मिलाकर सुख लेती हैं।

चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन।
जो धनी देवें पट खोल के, तो तब हीं उड़े एह तन।। ६४ ।।

नैनों की चंचलता और चतुराई की छबि की शोभा कैसे कहूं? श्री राजजी महाराज ही यदि यह माया का परदा हटा दें तो यह संसारी तन उसी समय छूट जाए।

बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग।
अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग।। ६५ ।।

आंखों के ऊपर की भौंहें तिरछी हैं जो गोरे अंग पर शोभा देती हैं। उनके अंग-अंग के आभूषणों की किरणें आपस में जंग करती हैं।

दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल।
सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांईं उठत माहें गाल।। ६६ ।।

झालों में सात किस्म के नगों के रंग तथा दोनों तरफ के जड़ाव शोभा देते हैं। उसकी झाई गालों पर सुन्दर शोभा देती है।

फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग।
तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग।। ६७ ।।

झालों के फूल के नग मुख पर शोभा देते हैं। उनके नगों के जोत की बहुत सी तरंगें उठती हैं।

ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने झाल ऊपर।। ६८ ।।

ऊपर साड़ी की किनारी शोभा देती है, जिसमें लाल, नीली, पीली, जरी की शोभा है। श्री श्यामाजी महारानी की मांग के ऊपर तथा झालों के ऊपर साड़ी की शोभा बनी है।

Nijanand App

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार।।६९ ।।

साड़ी की किनारी में जो कांगरी बनी है उसमें नगों की सुन्दर शोभा है। गोरे माथे तथा काले बालों की शोभा आकाश में जगमगाती है।

सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल।।७० ।।

सपने के तन की बुद्धि के अनुसार ही मैं इस शोभा को कहती हूं, क्योंकि यहां के शब्द अखण्ड परमधाम के स्वरूप को नहीं पहुंचते।

गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अर्स मोमिन।।७१ ।।

गालों का रंग गोरा है। इनके रंग परमधाम की रूहें ही जानती हैं, क्योंकि वही इस स्वरूप के दर्शन करती हैं। वह परमधाम की रहने वाली हैं।

मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत।।७२ ।।

मुखारबिन्द, नैन, नाक की बेशुमार शोभा है। नाक के अगले भाग में बेसर में मोती का नग लटक रहा है।

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए।
क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए।।७३ ।।

एक खसखस के दाने के समान नग की रोशनी आकाश में छा जाती है तो फिर नाक के आभूषण मुरली के नग की शोभा यहां की जबान से वर्णन कैसे हो?

हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद।।७४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी अखण्ड परमधाम के मालिक श्री राजजी महाराज के अंग के नूर से हैं। जिनकी सौंदर्य शोभा मंद बुद्धि से कैसे कही जाए?

दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल।।७५ ।।

श्री श्यामाजी के लाल होठों में मुख के अन्दर दांत शोभा देते हैं, जिनकी लालिमा का वर्णन कैसे हो? कौनसी उपमा दूं? जब कुछ पहचान हो जाए तो आत्मा अनुभव कर सकती है।

सुन्दर सरूप स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार।।७६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के अखण्ड स्वरूप के सिनगार की सुन्दरता रूहें देखना चाहती हैं। उनके हृदय पर लटकते हुए हारों को भी देखना चाहती हैं।

Nijanand App

एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत।।७७ ।।

एक हार मोती का है, दूसरा माणिक का, तीसरा लसनियां का सुन्दर शोभा देता है।

चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी।
इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली।।७८ ।।

चौथा हार हीरों का है। पांचवां नीलवी के नग का सुन्दर हार है। इन पांचों हारों के बीच दुगदुगी की शोभा बहुत सुन्दर दिखाई देती है।

क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सैन्या चढ़ाए।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए।।७९ ।।

दुगदुगी के पांचों नगों की शोभा कैसे कहूं? इनकी तरंगें टकराती हैं और आकाश में समाती नहीं हैं।

पांचों ऊपर हार हेंम का, मुख मोती सिरे नीलवी।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली।।८० ।।

पांचों हारों के ऊपर सोने के हार के बीच मोती और किनारे पर नीलवी के नग आए हैं। उसके ऊपर जड़ाव चम्पकली का हार है।

पाच पांने पुखराज, जरी मांहें जड़ित।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत।।८१ ।।

पाच, पन्ना, पुखराज, जरी चंपकली के हार में जड़े शोभा देते हैं। यह छाती के ऊपर लटकता है।

ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी।।८२ ।।

चोली के ऊपर गले में कांगरी के समान बेल बनी है। इसके ऊपर चंपकली के हार के मोती, माणिक, पन्ना के नगों के जड़ाव शोभा देते हैं।

पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए।
रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए।।८३ ।।

पांच लड़ी का चीर का हार कंठ में लगा शोभा देता है। इसके नग, रंग और धातु सब परमधाम के हैं। जिसकी सिफत यहां की जबान से कैसे हो?

सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग।।८४ ।।

सातों हारों के सात फुम्मक सात रंगों के पीठ पर चोटी के नीचे जगमग करते हैं।

बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत।
हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत।।८५ ।।

दोनों बाजुओं में बाजूबन्ध पहने हैं। जिनमें हीरा, लसनियां, नीलवी तथा जरी में लटकते फुम्मक देखकर रूह अटक जाती है और देखती ही रह जाती है।

Nijanand App

नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार।
चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार।। ८६ ।।

परमधाम की धातु की नौ रंगों के रत्नों के नगों का चूड़ा पहने हैं जिसकी शोभा अति अधिक है। चूड़े की जोत आकाश के अन्दर झलकती है।

नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत।
जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत।। ८७ ।।

चूड़े के अन्दर नौ रंगों के रत्नों की अलग-अलग चूड़ियां झलकती हैं। जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं। ऐसे परमधाम की शोभा का यहां कैसे वर्णन करें?

अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत।। ८८ ।।

वहां की धातु में बेशुमार चमक है और उसी में रंगों की चमक बेशुमार है। वस्त्रों में रेशम की तरंगें भी बेशुमार हैं और कोमल हैं।

कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार।। ८९ ।।

हाथ की कंकनी (कंगन) सोने के जड़ाव की हैं जो झनझन की आवाज करती हैं। उसमें बेल, फूल, नक्शकारी जड़ी है और किनारे पर चूड़ा शोभा देता है।

निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग।
अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग।। ९० ।।

पोहोंची और नवघरी शोभा देती है जिनमें पांच-पांच तरह के नग दोनों में जड़े हैं। आपस में इनकी किरणें टकराती हैं। इनका जड़ाव भी परमधाम की रसायन में समझना।

हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल।। ९१ ।।

हाथ की रेखाओं को कैसे कहूं? वह बहुत ही साफ और कोमल हैं। पूरे पोहोंचे का (पंजे का) रंग कैसे बताऊं? यहां की जबान से बयान करने में नहीं आता।

पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस।
अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस।। ९२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के हाथ की पांचों उंगलियां पतली तथा अलग-अलग तरह की हैं। परमधाम के अंगों का कैसे वर्णन करूं? यह अति उज्ज्वल और लालिमा लिए हुए हैं।

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी।। ९३ ।।

उनमें आठ रंग के नगों की मुंदरियां पहन रखी हैं। एक कंचन और एक आरसी यह दो अंगूठों में पहनने से दस हो गई हैं यह दस उंगलियो की शोभा है।

Nijanand App

मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज।। ९४ ।।

माणिक, मोती, लसनियां, पाच, पन्ना, पुखराज, गोमादिक और नीलवी आठ नगों की आठ मुंदरियां उंगलियों में शोभा देती हैं।

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार।। ९५ ।।

अंगूठे में एक हीरे की आरसी वाली मुंदरी है, जिसमें श्री श्यामा महारानीजी अपना सिनगार देखती हैं। उसका तेज आकाश में झलकता है।

नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए।
एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए।। ९६ ।।

हाथ के नखों का नमूना यदि हीरे से देती हूं तो भी देने योग्य नहीं है, क्योंकि नाखून के जर्रे का तेज करोड़ों सूर्य को ढांप देता है।

अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन।
बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन।। ९७ ।।

परमधाम की सखियों के जो जीवन हैं उन चरण कमलों की हकीकत कहती हूं। परमधाम की रूहें हमेशा इन चरणों तले रहती हैं।

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए।
मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए।। ९८ ।।

चरणों के नीचे का भाग अति कोमल है, जिसका रंग लाल है। दोनों चरणों के नीचे गहराई (लांक) है और कई तरह की बारीक रेखाएं हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर।
जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रेहेत हैड़े अन्दर।। ९९ ।।

चरण कमलों की बनावट अति लुभावनी है। अर्श की रूहों के हृदय में यह चुभ जाते हैं।

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित।
टांकन घूंटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत।। १०० ।।

इनका कोई दूसरा नमूना नहीं है। पांव के पंजे बड़े शोभा देते हैं जिनमें टखने, घूंटी, कड़ा पहनने की जगह है। एड़ियां तथा पांव के तले वाला भाग सुन्दर झलकता है।

ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत।
ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत।। १०१ ।।

ऐसी सुन्दरता की छवि को देखकर इन चरणों के तले बसने वाली रूहें ही परमधाम के सुखों को जानती हैं जिनकी इन चरणों से निसबत है।

चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी।
कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी।। १०२ ।।

चरणों में झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला अलग से नगों से जड़े हुए शोभा देते हैं।

Nijanand App

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरीं।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी।। १०३ ।।

इनमें नीले, पीले नगों की झांझरी है जिसमें मोती, माणिक, पन्ना के नग जड़े हैं। घुंघरी का नग लाल है जिसके कुण्डे सोने के हैं।

गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग।
घूंघरी नाकों बीच पीपर, फुमक करत जवेरों जंग।। १०४ ।।

इन घुंघरियों को रसायन से सुन्दर गांठों में बांधा है। अर्श के पांचों नगों की इनमें शोभा है तथा घुंघरी के कुण्डों के बीच में पीपल के पत्ते जैसी शोभा है जिनके फुम्मक जवेरों की किरणों जैसे जगमगाते हैं।

हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत।
नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत।। १०५ ।।

चरण कमलों में कड़े सोने के हैं जिनमें हीरा और लसनियां के नग जड़े हैं। कांबी में कुन्दन से नीलवी के नग जड़े शोभा देते हैं, लगता है इसकी जोत सबसे अच्छी है।

बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार।। १०६ ।।

जब श्री श्यामाजी महारानी चलती हैं तो इन आभूषणों से सुन्दर मधुर ध्वनि निकलती है और कड़े की रनकार की आवाज होती है। इन आभूषणों में खुशबू है, चमक है और कोमलता है तथा बेशुमार रोशनी है।

अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार।। १०७ ।।

उंगलियों में बिछुए पहने हैं और अंगूठे में अनवट जिनमें पन्ना, मणिक, मोती जड़े हैं। श्यामा महारानी ठुमक-ठुमक कर चलती हैं तो सुन्दर आवाज करते हैं।

नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार।। १०८ ।।

अंगूठे व उंगलियों के नखों की जोत आकाश में नहीं समाती। इनके तेज के सामने करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं और इनकी रोशनी शीतल और सुखदाई होती है।

एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर।
जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर।। १०९ ।।

एक नख की रोशनी में जब करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं, तो कोटि-कोटि कहूं तो भी एक नख के नूर के सामने कुछ नहीं होते।

कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब।
हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब।। ११० ।।

श्री श्यामाजी महारानी की ऐसी बेशुमार छवि की शोभा है कि जिससे उनके पेट, पसलियां, छाती तथा सारे अंग, हाथ, पांव, कण्ठ और मुखारबिन्द शोभायमान हैं, जिनका कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे।। १११ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की कोहनी, कलाई, उंगली, पेट, पसलियां, छाती, बाजू, हाथ, पांव, पीठ और मुखारबिन्द की छवि सब श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की शोभा है।

में सोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का।
सो क्यों पोहोंचे इन सांई को, जो बीच अर्स बका।। ११२ ।।

संसार की जबान से और यहां की चीजों से इनकी शोभा का वर्णन कैसे करें जो अखण्ड परमधाम के मालिक हैं।

बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल।
सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल।। ११३ ।।

जब मुख में लाल पान बीड़ा चबाती हैं तो उनके मुखारबिन्द की शोभा के समान कोई और दिखता ही नहीं है जिससे उपमा दी जाए।

सुच्छम वय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर।
बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर।। ११४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की किशोर अवस्था और युवा अवस्था की मस्ती से भरे अंगों की शोभा अखण्ड है। जो कभी नहीं बदलती। वह सदा प्रेम और स्नेह से भरपूर है।

नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़ जाए।
जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए।। ११५ ।।

इन स्वरूप का नाम ही लेने मात्र से स्वप्न का तन उड़ जाता है। जब तक रूह को इश्क नहीं मिला है तभी तक शोभा का वर्णन कर रही हूं।

कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊं।
ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊं।। ११६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के ऐसे सुन्दर मुखारबिन्द को देखकर करोड़ों बार बलिहारी जाऊं। यह सुख अपने परमधाम की रूहों को मिले, तो उन्हें बताऊं।

मुख छबि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार।
देख अगूंठे आरसी, भूखन करत झलकार।। ११७ ।।

मुखारबिन्द की सुन्दरता और सिनगार सब सुन्दर शोभा देते हैं। जब यह अंगूठे की आरसी में देखती हैं तो सभी आभूषण जगमगाते हैं।

भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान।
हाथ पांउं उर कण्ठ हंसें, सब नाचत मिलन सुभान।। ११८ ।।

आंखों के ऊपर भौहें, नैन, मुख, नासिका, हरवटी, होंठ, गाल, कान, हाथ, हृदय और गला सभी श्री राजजी महाराज से मिलने के लिए हंसते और नाचते हैं।

Nijanand App

तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक।
कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक।। ११९ ।।

श्री श्यामा महारानी के मुखारबिन्द की शोभा, तेज, सुन्दरता का थोड़े से थोड़ा (कम से कम) वर्णन भी असम्भव है।

श्रवन कण्ठ हाथ पांउं के, भूखन सोभित अपार।
एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार।। १२० ।।

कान, गला, हाथ, पांव के आभूषण बेशुमार शोभा देते हैं। एक ही आभूषण में कई तरह की नक्शकारी और रंग हैं। जिनका रूह दिल में विचारकर वर्णन कैसे करे?

नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए।
ए सोभा न आवे सब्द में, नेक कह्या वास्ते रूहों के।। १२१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने सिनगार के एक थोड़े से अंश का ही यहां की जबान से रूहों के वास्ते बयान किया है। वरना परमधाम के सुख और शोभा यहां के शब्दों में किसी तरह कहे नहीं जा सकते।

मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम।
पिउ सों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम।। १२२ ।।

श्यामाजी महारानी मधुर जबान से सुन्दर मीठे वचन प्रेम से बोलती हैं। वह प्रीतम से मर्यादा में हंसकर बातें करती हैं।

सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत।
कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत।। १२३ ।।

उनके इशारों से अंग में चैन और करार आता है। इनका हृदय अति कोमल है, कोमलता की सिफत कैसे करूं?

चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत।
अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत।। १२४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चतुर चाल का बयान कैसे करूं? जब उनसे बोलेंचालें तो पहचान होती है। वह श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की किरण हैं और इसलिए इनके इश्क की खूबियां बेशुमार हैं।

मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें।
सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें।। १२५ ।।

मुखारबिन्द में सुन्दर मीठी जबान है। जिसकी मीठी बोली हृदय में चुभ जाती है। उस सुख को अर्श की रूहें ही जान सकती हैं। कहा नहीं जा सकता।

क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउं भरत।
नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत।। १२६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चटक-मटककर चलने की चाल का कैसे वर्णन करूं? इनका नमूना कोई नहीं है।

Nijanand App

बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार।
गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार।। १२७ ।।

इनकी चाल पर आभूषण अधिक तेज झलकते हैं जिसे देखकर मैं बलिहारी जाती हूं। इनके चारों तरफ रूहें सिनगार सजाकर बैठी हैं।

सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन।
जोत न माए आकास में, यों घेर चली रोसन।। १२८ ।।

इन रूहों के वस्त्र-आभूषणों की बहुत बड़ी शोभा है। जिनकी किरणें आकाश में नहीं समातीं। चारों तरफ फैली हैं।

अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान।
किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान।। १२९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तीसरी भोम के आसमानी रंग के मन्दिर से दिलचाहा सिनगार करके रूहों का मिलावा लेकर धनी से मिलने चलीं तो आगे से श्री राजजी महाराज ने आकर उनका स्वागत किया।

ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख।। १३० ।।

श्री राजजी महाराज और श्यामाजी महारानी तथा सब रूहों के सिनगार के सुख का चौथा दधि सागर है जो अति सुखदाई है। यदि तुम्हें श्री राजजी महाराज बल दें तो इश्क के प्याले पीकर उनके दर्शन करो।

जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत।। १३१ ।।

युगल स्वरूप जो रूहों को बड़े प्यार से सुख देते हैं, उसको कैसे कहूं? श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की नहरों से यह सुख बार-बार तुमको देते हैं।

ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत।। १३२ ।।

यह मेरे वचन सब सपने के हैं और स्वप्न के शब्दों में ही मैंने महिमा गाई है। सपने का अखण्ड से कैसा सम्बन्ध? इसलिए मेरे इन वचनों से युगल किशोर की शोभा को कैसे कहा जाए?

सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बांएं नजर।। १३३ ।।

यहां के शब्द श्री राजजी महाराज को नहीं पहुंचते फिर भी चुप कैसे रहें? मेरे दिल, कान और जबान श्री राजजी महाराज के बाएं अंग विराजमान श्यामा महारानी जी की ओर ले चलते हैं।

एते दिन ढ़ांपे रहे, किन कही न हकीकत।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत।। १३४ ।।

इतने दिन तक किसी ने भी इस हकीकत का बयान नहीं किया। यदि मैं अब भी दुनियां में हक की सूरत जाहिर न करती तो फिर हक की सूरत कभी जाहिर न होती।

Nijanand App

ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत।
सो द्वार खोले मैं हुकमें, अर्स बका हक मारफत।। १३५ ।।

यह श्री राजजी महाराज की खिलवत की छिपी बातों के भेद क्यों कहें? यह मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही अखण्ड घर परमधाम की, श्री राजजी महाराज की तथा मारफत के ज्ञान की पहचान कराई है।

दुनियां से ढ़ांपे रहे, अर्स बका एते दिन।
रेहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन।। १३६ ।।

अब तक दुनियां में अखण्ड परमधाम की हकीकत छिपी हुई थी। यदि मेरी आत्मा अब भी जाहिर न करती तो यह ढकी ही रह जाती।

ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन।
इनसे हैयाती पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन।। १३७ ।।

परमधाम के इस छिपे रहस्य को खोलने में मेरी रूह और रूहों को बड़ा सुख मिलता है। इससे चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड तथा त्रिगुण को भी अखण्ड मुक्ति मिलती है।

कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन।
हकें आखिर अपने कौल पर, किए जाहेर आगूं रूहन।। १३८ ।।

जब तक कयामत का समय नहीं आ गया तब तक यह ज्ञान छिपा रहा। आखिर श्री राजजी महाराज ने अपने किए कौल (वायदे) के अनुसार अपनी रूहों के आगे आकर जाहिर किया।

ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप।
दई साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अर्स सरूप।। १३९ ।।

यह मैंने परमधाम के युगल स्वरूप श्री राजजी श्यामा महारानी का वर्णन किया है, जिसकी गवाही रसूल साहब ने कुरान में और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने दी है।

एही लैलत-कदरकी फजर, ऊग्या बका दिन रोसन।
हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन।। १४० ।।

लैल तुल कदर की रात्रि के बाद फजर का ज्ञान यही है जिसमें अखण्ड घर (परमधाम) की हकीकत जाहिर हुई जिससे श्यामा महारानी और रूहें अपने घर पहुंचेंगी।

महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन।। १४१ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह को और रूहों को कहती हैं कि ऐसे सुख के सागर में गर्क होकर अपने घर आओ।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४९० ।।

Nijanand App